

DPN 6304

Title : महाअष्टमि पूजा विधि MAHA ASTAMI PUJA VIDHI

Run. No. 6995

Cat. No. 34

Micro. No.

Subject विधि / Religious Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / नेपाल भाषा; लिपि / गाना
newa direction.

Size in cms. 16 x 6

Folios 33

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 955 / 956

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : मन्त्र ३ /
Mandala monograms included.

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः शिवाय ॥ महाअष्टमि पूजा विधि लिखिते ॥ स्वस्ति एतत् प्रमाणम् ॥

15

10

5



5

10

15

20

O CMS

ॐ नमः श्रीहरि सिद्धि साधुय ॥ विष्णु साधुय कालि कलुककल
 मानिनी नीलवर्णा शुद्ध चंद्रावुवर्णा हरिकमनि निरं निर्मल
 योमनुर्या ॥ विदुर्को गीनरावा दिनकन वपुषा ॥ एनिदवीनि
 वरु ॥ साधवी गुरुपुत्र ॥ हरसिद्धि विधिगया पुमानुदणकि ॥

विजयदशमी खड्ग जागृजा निमित्तार्थ ॥
 १ माहानवमीया वैद्य ॥ इन्द्रादी स्वर्गपूजा निमित्तार्थ ॥ वाक् ॥
 १ इन्द्रादी निमित्तार्थ ॥ ॥ सवर्ग सफु कथं कलि ॥ युगं नो मिजय
 यदि उगुचली नमो ॥ ॥ यदि देव गना ॥ सर्व पूजाम
 दायसा नदा ॥ ॥ कामपुदय पुनरा गमनाय ॥ ॥ क्रमा

१ॐ नमः शिवाय ॥ माहात्म्यमिदं विधिर्लिखितः ॥ रविक
 स्नानयाय ॥ ॐ कायकान्तः प्रममना ॥ निर्मलं न वाच
 कविधि ॥ कीर्तिं विचकीर्तयतां अष्टाययादूकानमः
 ॥ यियाववायलसायावयन ॥ धनधनकस्तिनस्नानय
 यखलुं सत्रयनया कर्तुं लक्ष्मीखलुं कूलकूमकमुनि

नकुचन्दनमिधुदवदखलुमंथलिनिर्मथगतानलि
 यनं योय ॥ दिक्कितां अदूवालयतां आरास्नानककलुयतां
 कातययुताकातमगदतादचामगुदानवायखलु
 जानकतवात्रं लसायइतां ॥ अंगीर्षद ॥ नेहं जीजाव
 मनिर्यस्वाहा ॥ खदं अययुथवथवथायसइतां ॥ श्री

गङ्गावतीमधो ॥ महाकालवलि, थवस्ववस ॥ कृत्याने
 वलि, थवडवस ॥ मूलवलिमधुस ॥ वरु कगलोसक
 लसगमस सगमला अर्थयागुवाचा नामालका ॥
 थलुनिसडकुवायमालमिधुनमालअकतडाहलल
 नन ॥ धनसूर्याय ॥ उं अद्यादि ॥ शुभनमस्कार ॥

साधयागुयुगा आत्मयुजा ॥ गंगादानार्थ ॥ उं तत्वायामि
 दि ॥ रेवदजादियंमालकासं वदयदय ॥ नृनिवदा
 न ॥ पुनसूर्याय ॥ असाउनयाय ॥ अस्व
 कुलकात्रादि ॥ शुभनमस्कार ॥ गंगादद्यार्था नृत्वा
 उशुचलांदिनासयादावकल ॥ असाउनयाय ॥

कीन्ना मयभागा ॥ धर्ममूलमनुसू मनायादावयन नव
नीजनाधनया ॥ ॐ अं अदिदवीरुगवनी मध्वसु
पादकीमनु अं अं आसा मां आसा ॥ ॐ यावद्वन्द्वी मा
नस मही अग्निदुलावदं ॥ गावन्स मयिं कालं च नं स्काय
स्त्रिभोरुव ॥ ॥ स्त्रिभोरुव मदादवी दवानां मनजा धिय

नयावेदं समीपस्थं तावत्वं विनमाचल ॥ दुर्ज्ञेय
नमः कवी दुर्ज्ञेययुक्तकरी ॥ ७ ॥ गन्तो वायना साय
जसलनं यिरुव ॥ सर्वलक्ष्मीवृद्धार्थं सर्वसौख्य
र्थकं ॥ अमुं श्रीमद्दसंमीपं दुर्ज्ञेयविष्णुं नमस्कृत्य ॥
विनवाक्यं (अन ॥ ४ ॥ ताजं दिक्वादसामाननियनपाव

॥ वनो जूदि कमद सो लि न नि हा प्र रुत्रा ॥
 थन मान नि प्र न या ॥ अरु ना दि ॥ त ना द वा र्व नी ॥ न न
 र व लु स रू जा थ लि नि स (था म नु न यू जा या य ॥ नुं ड म रू
 न र ग य लुं अरु या रु ॥ नुं ड की ना उ य द रू
 रू द या य र ॥ नुं ड रू उ ग य लुं ये सि न म रू
 ॥
 नि म रू दि उ ग य लुं ये नी सा ये वा य ॥ ॐ डीं रू स द रू
 न क रू ग य लुं ये क व वा य रू ॥ ॐ धूं रू स ॥
 न रू ग य वा य ॥ ॐ मृ रू रु न उ ग य लुं ये रू
 ॥ (था उ ग य रू न्या स ॥ क रू न्या स ॥ अ रू
 रू मा डि का न्या स ॥ त रू रू ज न या रू य रू ॥ नुं ड रू रू ज न

अकिं न तद्विनाशियतयः ॥ उत्तम धारुणं तं नि
 कायं यादु कां पूजयामि ॥ चन्दनाकं त्रु तयुष्यं नमः ॥ ध्रु
 नूनं डाडसय ॥ अर्घया गुरुणा ॥ नै ५ डां डी कुं सुसुं न
 २ धान २ तनतनू २ त्रययत २ ययत २ कुरु २ यम २ यन
 धातय २ विद्यातय २ विष्णु २ कुं ३ रु ० कुं म ॥ गी मा गी

काविषयादु कां पूजयामि ॥ उत्तम धारुणं तं नि
 नन्दविनाशियतयः ॥ अर्घया गुरुणा निकायं यादु कां
 पूजयामि ॥ चन्दनाकं त्रु तयुष्यं नमः ॥ ध्रुवा रुनादि
 ॥ या निगु डाडसय ॥ रुतसु द्वि ॥ नै ५ डां डी कुं सुसुं न
 कुं डां डी नै ५ यादु कां पूजयामि ॥ साधनमनु ॥ नै ५ कु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ हृद्यं पद्मं यतिस्मिन् ॥ ॥ मूर्धन्यं नखं विद्यावता
 य ॥ २॥ आसनं ॥ नैऋतं आध्यात्मिकं यनं ॥ नैऋतं
 मेकासनाय नमः ॥ नैऋतं कन्दाय नमः ॥ नैऋतं नात्राय नमः
 नैऋतं यथाय नमः ॥ नैऋतं यथाय नमः ॥ नैऋतं यथाय नमः
 मः ॥ नैऋतं कर्त्तिकाय नमः ॥ नैऋतं सिंहासनं यथाय नमः ॥ नैऋतं
 मदिश्यासनं यथाय नमः ॥ नैऋतं शुभं ॥ सनाय नमः ॥ नैऋतं निष्ठ
 म् ॥ सनाय नमः ॥ नैऋतं ध्यानं ॥ थलुनियार्धनं ॥ नैऋतं
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लोकासा विष्णुत्कानि सन्धरा ॥ धीरा वदस्कुलाशाशादि

न गायन रुपा नी की ली ती क लुला काली क यु नाम निभा च
 युना ॥ न त्र माला विचि नै रा ठ माला वल विता ॥ अष्ट दश
 रुडा काना दिवा वसु गी वि ता ॥ रव ड्क वा ने तथा च कु वरी
 कुश वला न्धना ॥ उ म नू शूल या गु क द कि नै व ना डि ता ॥ रु नी
 धनू गंदा द्य लं पा मी त ड्क नि रु स ॥ ख त्वा गं का म री त था ड्क
 रु ट्क च धन रु स्ता गदा च णा स ॥ म लि ता ॥ x मू २

ग्रा म्ये मे क सं यो मे ॥ वि नु म दी रु था सि धि सिं हा स ना य नि डि ता ॥
 म हि या वा न्द त ड्क ता म हि या गु न वि द ति ॥ म र्व दे ग वि
 ना स न स षा र्वा ठ म र्हा सा च व त्वा गं ठ म नू वि ना ॥ यु र्व य
 लु पु च लु च च लु अ च लु ना यि का च लु च लु व ती च व
 च लु नू या ति च लि का ॥ प्रा च ना अ नू तो कृ ष्ण नी ला शु क्रा
 म हा व ल य ना क र्म ॥ श द य क ति शूल न वि ध त्वा स लि ता नू रु ॥ ५ ॥ य न च

यधृष्टिका। यीतया लुला गैया, जूलि वस्त्रा रु निस्त्रिणां ॥ ध्या
 यमानं महादवी, महारु गवतिनमा इमुते ॥ ध्यानपूर्व नम
 ॥ निरिद गिलां उलित ॥ मूलमनु ॥ नेऊ मृष्टरु न ईं डौ नाउ
 यद ईं श्री उग्रव ॥ निमर्धनीय दू ईं रु ॥ स न क न द डौ
 धूं ईं स ॥ मृष्टरु न नम स्वाहा ॥ ३ ॥ नेऊ श्री डौ च लु वाग्रा

यं श्रीं श्रीं यादूकी ॥ नैऋतसुरेजानन्दशक्तिशेखरवानन्दश्री
 महाविद्यानाथस्वामी ॥ श्री यादूकी ॥ नैऋतवृद्धायनीनमः
 नैऋतमहस्वामीनमः ॥ नैऋतश्रीकोनानीनमः ॥ नैऋतदेवस्थानम
 ॥ नैऋतवानाहीनमः ॥ नैऋतबुद्धायनीनमः ॥ नैऋतचामूल्य
 नमः ॥ नैऋतमहालक्ष्मीनमः ॥ नैऋतकृष्णायनमः ॥ नैऋ

यदि द्वात्रसमाश्चको ज्ञायादु ॐ रुम ७५ सि १ ।

^{५२५१}
 कलबदूकनाथनमः॥ नैऋत कनगलोऽथनाथनमः॥ नैऋ
 थागिनीशानमः॥ नैऋ सर्वज्ञानियादूकीयूजयामि॥
 नमस्तस्य॥ ॥ गलरवीदयूजा॥ नैऋ अज्जुदयलुय
 यादूकी॥ उँडूँ ॐ ॐ ययलुययादूकी॥ ॐ डूँ डूँ च
 न्दागययादूकी॥ उँ डूँ मृमचलुनाथयादूकी॥ उँ डूँ

उचलुययादूकी॥ ॐ डूँ नुनेचलुवरीयादूकी॥ उँ डूँ
 डूँ चलुनूयाथयादूकी॥ उँ डूँ अज्जु ४ अग्नियलिकाथय
 दूकी॥ अवाहनादिमृद्वारवीदकन॥ ॥ थामूलमनुनीदलि
 विय॥ ॥ मूनजवसयूजा॥ उँ डूँ संदूदयायनमः॥ उँ डूँ
 मंसिन्ना॥ उँ डूँ ससिवाये॥ उँ डूँ संकवचाय॥ उँ डूँ
 वषट्

^{कोवट} ^{कायलुट}
 सनगुगयायाँ डं डी सजु कारु नमः ॥ धन आसनन ॥ न
 ऊयद्मासनायशाँ नुँ डमिहासनायशाँ नुँ डमहिषासनाय
 शाँ ध्यानं ॥ नुँ डकात्यायनीमहादेवी रुमः ॥ माङ्ग नू चिनी स
 वलिकानसौ राचयी नान्नगयथाधना ॥ हालाहालितमध्व
 र्काकोषेकलितविग्रहारद्वादलिताय जादेवी यामद

चधापि ॥ स्वस्तीवादी तथासकिं ॥ हिलचकुंदकिहा
 रुलंधनुं कडाँ पामं क० नयामककन ॥ सिंहासनसमा
 र्दय महिषासुरयं चिनी ॥ मूलककयद्यानीकाधि
 श्यं निघारिनी ॥ ध्यायमाना महादेवी सर्वसंकुकर्यक
 नीरुडयाँ द्यादेवी गेये न्दा कात्यायनि नमो ॥ १ ॥ ध्यानयुक्त
 दिग्विजय देवी कात्यायनी ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

म॥ थन्निविमं ॥ मन्त्रनविश्लि ॥ डौं नै ५ डौं सँ शी मरु
 दुर्गे वलि का लयनी पादुका ॥ ३ ॥ गग॥ यनिवानयुजा ॥ नै ५
 सुँ ॥ ययाये पादुका ॥ नै ५ सुँ ॥ विषयाये पादुका ॥ नै ५ सुँ
 सुँ ॥ जिताये पादुका ॥ नै ५ सुँ ॥ अयनाजीताये पादुका ॥ नै ५
 सुँ ॥ उमने पादुका ॥ नै ५ सुँ ॥ समने पादुका ॥ नै ५

सुँ ॥ मारुने पादुका ॥ नै ५ सुँ ॥ आकरने पादुका ॥ ४ ॥
 सुँ ॥ वलिविय ॥ आवारुनादि ॥ ५ ॥ सुँ ॥ दमुडाकन ॥ ५ ॥ मूल
 सुँ ॥ वसयुजा ॥ नै ५ सुँ ॥ दयायनमं ॥ नै ५ सुँ ॥ जिनसपादुका
 ॥ नै ५ सुँ ॥ शिषायपादुका ॥ नै ५ सुँ ॥ कवचायपादुका ॥ नै ५ सुँ
 ननु गायपादुका ॥ नै ५ सुँ ॥ अक्रायरुद्रपादुका ॥ थन अरु

ॐ ॥ डों ॥ यद्वा सनाययादुका ॥ नै ॥ सिंहा सनाययादुका ॥
 नि ॥ मरिषा सनाययादुका ॥ ध्यान नमस्ति ॥ नै ॥ दुःखं स्वर्ग
 मन्त्र देवी नमामि त्रीयुधा तिनी ॥ जे दिमि युष्मत्संका सौ द्वा
 लना ॥ विनू यथा ॥ सर्वा लं का त्रे संयुक्ता दाल माला व न वि
 ना ॥ अष्टादश रुजा कानां यीन व क संती नू धा ॥ खड्ग सै किं
 वि २

तथा वारं ॥ अं ॥ सै मं ॥ लं ॥ तथा ॥ वद ॥ जे वसं ला का ॥ अ ॥ यकी सै
 ले यद कि ॥ लं ॥ रुट ॥ यो या मंग ॥ धी वं ॥ रुट ॥ नी दय नै ॥ डं ॥ अ
 मलं ॥ लं ॥ गु लं ॥ का ॥ डं ॥ धन य द्वा म क रु ॥ ॥ सिंहा सन ॥ गा द
 वी ॥ पु त्या ली ॥ रु कि ॥ रु ॥ श्री ॥ मरु मरि ष म्पू ॥ रु ॥ द वा या द न
 यं ॥ वि ॥ गं ॥ ॥ सै ॥ ल न मरि षा या ॥ न व कु म ॥ ध्रं ॥ धे व च ॥ की

उमेश्वरी ३

२० वां हि

वसुधावतारीयकालानूपरिक्ते ॥ वृष्णादिमातृ
 धूजनीयामरुध्वनी ॥ आयमानामदादुर्गनमाहित
 दवर्गा ॥ ध्यानयुष्यनमः ॥ मूलनय्याजलि ॥ नैऋत
 रुगवर्गा ॥ श्रीचलीकाशायनीकुम्भस्थायीयादुर्गा ॥ ३॥ श्री
 गणेशयनिवासेषु ॥ नैऋतवृष्णाद्यैयादुर्गा ॥ नैऋतकी

रुध्वनीयादुर्गा ॥ नैऋतकीमात्रीयादुर्गा ॥ नैऋतवैष्णवीया
 दुर्गा ॥ नैऋतबालाश्रीयादुर्गा ॥ नैऋतयैवत्यायनीयादुर्गा
 ॥ नैऋतयामुक्त्यायैयादुर्गा ॥ नैऋतमहालक्ष्मीयादुर्गा ॥
 आयादुर्गादि ॥ आनिर्गुणसम ॥ ॥ चित्तुं कृताया ॥
 नैऋतकौकौकुं ॥ कुरुयालाययादुर्गा ॥ आग्नेय ॥ नैऋतश्रीकुरु

यशवन्तनाथयादुका॥ नै ॐ श्रीं श्रीं श्रीं गं ॥ (नै) कूलम
 समानयादुका॥ नै मृत्वा॥ नै ॐ श्रीं श्रीं सिद्धि या गिरीया
 दका॥ वयुवा॥ नै ॐ श्रीं श्रीं सिद्धि या ॥ मृत्वा ये यादुका॥ (अनं
 वलिविय॥ गंगालाक ॥ यालयुजा॥ नै ॐ लौ लौ लौ ल ॥ नै ॐ
 ययादुका॥ नै ॐ नौ नौ नौ न ॥ नै ॐ अमनयादुका॥ नै ॐ ॐ

मी मूं म ॥ मूं अमनयादुका॥ नै ॐ कां कां कूं क ॥ नै ॐ नै मृत्वा
 ययादुका॥ नै ॐ वां वां वूं व ॥ नै ॐ वननाथयादुका॥ नै ॐ
 ऊं यां सीं यूं य ॥ नै ॐ याय वं यादुका॥ नै ॐ सां सीं सूं स ॥ नै ॐ
 कवनाथयादुका॥ नै ॐ हां हां हूं ह ॥ नै ॐ शां शां शूं श ॥ नै ॐ
 दका॥ नै ॐ लौ लौ लूं ल ॥ नै ॐ अरुथयादुका॥ नै ॐ नौ नौ नूं

ॐ उच्चैः श्रुतं यादुकां ॥ नर्वयलिवियं ॥ ॥ गता कलशयूजा ॥
 ॥ आसनत ॥ नैऋत आधाराशकयस्यादि ॥ ध्यान ॥ ॐ वन्द्य
 ॥ त्रिपुरांगत ॥ चन्द्राद्वृत्तस्य चतुरनुकास्या लावर्नीति
 निःशुद्धीरुतवामधा ॥ उत्सर्गसामरालकी ॥ (ध्वनिगर्जला
 चतुरय ॥ मृग्य ॥ अयमालाका वनदारुयसंखधा ॥ दृष्ट्या

कलशान्द्रसंधि ॥ सुलाकशकिध्वज ॥ नानागुनलसोराज
 लालकयूलमलित ॥ चन्द्रलनाचसंयू ॥ सखितायनमं
 शनी ॥ ध्यानयुध्यनमः ॥ ॐ वन्द्य ॥ लायादुकां ॥ ॐ विष्णवया
 दुकां ॥ ॐ सदाजिवाययादुकां ॥ ॐ संयू ॥ कलसंयमृग्य
 उयायजिवशकिरुक्ताययादुकां ॥ जूयादनादि ॥

१८७ कार्तिक सुक्र वंश ३ पाठ भावनम् ॥

१८८ कार्तिक सु० ११ घाट ३ द्वादशमालमिथि
मिथवासा ज्येष्ठा

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ गणेशाय नमः ॥ ॐ गणेशाय नमः ॥
 ॐ विष्णुनामाय नमः ॥ ॐ लम्बाधनाय नमः ॥ ॐ यन्त्रेश्वराय नमः ॥ ॐ
 सुयशसाय नमः ॥ ॐ हस्तेश्वराय नमः ॥ ॐ मूर्खवाहनाय नमः ॥ ॐ सि
 ङ्गेश्वराय नमः ॥ ॥ मूलवल्याय नमः ॥ ॐ अमिताय नमः ॥
 नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॥ गणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥ ॐ सुविनाय नमः ॥ ॐ सुनयन
 समनस्य नमः ॥ ॐ कविनादिर्यय गणेशाय नमः ॥ ॥
 गणेशाय नमः ॥ ॐ अश्वत्थामाय नमः ॥ ॥ महालक्ष्मी
 नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ सिंहासनाय
 नमः ॥ ॥ रुद्राय नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥

मातायादुर्का ॥ उँ महिषासनाये नमः ॥ उँ सिंहासनाये नमः
आदय तिसक ॥ नै डी यिक दवनाये जगज्जननी श्रीसिद्धि
लक्ष्मीयादुर्का ॥ ॥ थनभाहनिधुं ॥ ॥ गतावेलिष्टजा ॥ उँ डी
आरू रू उडु मृमृ ०० ननडाओ ऊँ मृ ४ श्री प्रयाग कृत्या
लयं भूमिगाडीने ववाय बुझाय नीडाकिं सहिताये कदम्ब

वृक्षाय नि आग्निनी गता सा हि ता ये स्म श्म य स गता स्य
निवा नाय ॐ म म पृथु धृप दी पृजा व लिङ्ग रु २ स र्वा र्थ मि
हि म य य च्छु स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ऊँ की र्व र्गी र्द्य हं ४ श्री व नू ल कृणा
य नू नू र्गी र्म प वा य मा रु ऽ व नी हा कि स हि ता ये क लू वृ द्ध स्मा
य य नि आग्निनी गता स हि ता ये स्म श्म ना य स ग न स्य निवा ना

^{म०} ^{म०} य०० दं मया युष्य धूय दीय दृजा वलिं गृह्ण २ सर्वार्थसि
 द्विं मय्यय च्छादा ॥ ३ ॥ उँ डीं ३० उँ रं ३० ४ कां ल के गाय
 य०० न वाय को माली ग किं स हि ता ये र ग क न वृ क्क
 य०० नि या गिनी ग ल स हि ता ये र ग म न य म ग ल स्य नि वा
 वा य०० मं म म युष्य धूय दीय दृजा वलिं गृह्ण २ सर्वार्थ

सि द्विं मय्यय च्छादा ॥ ३ ॥ उँ डीं ३० उँ रं ३० ४ कां ल स क्क
 या ल य क्का ध रं न वाय वे स्ल वी ग किं स हि ता ये नि ग वृ क्क
 म य०० नि या गिनी ग ल स हि ता ये र ग म न य म ग ल स्य नि
 वा ना य०० मं म म युष्य धूय दीय दृजा वलिं गृह्ण २ सर्वार्
 र्थ सि द्विं मय्यय च्छादा ॥ ४ ॥ उँ डीं ३० उँ रं ३० ४ कां ल य नि

कृष्णाय नमः नवाय वा नादी शक्ति सदिताये जूष सुव
 स्वस्वयये जागि निगल सदिताये सांग नाय सगल स्य लिवा
 नाय ॐ श्रीमम यूस्य धूप दीप पूजा वलि गृह २ सर्वार्थ सीम
 यय चूसाहा ॥ ५ ॥ उँ डी यँ नँ वँ ४ शी चलि कृष्णाय कया
 नरे नवाय ॐ लाय नी शक्ति सदिताये दुम्वृक स्फप नि
 ५२

च जागि नीगल सदिताये सांग नाय सगल स्य निवा नाय
 ॐ श्रीमम यूस्य धूप दीप पूजा वलि गृह २ सर्वार्थ सिद्धि मय
 यय चूसाहा ॥ ६ ॥ उँ डी यँ नँ वँ ४ शी काम नूक नाय री खल
 नरे नवाय वा मूली शक्ति सदिताये ताल वृष स्फयथा जागि
 नीगल सदिताये सांग नाय सगल स्य निवाय ॐ श्रीमम य

अथ धूप दीप पूजा वलिगृह्णन् सर्वार्थसिद्धिं भयं यच्छुभं
 ॥१॥ ॐ क्लीं ह्रीं स्रं ह्रीं ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ गणेशाय नमः ॥ वा
 ॥ अथ साक्षात् क्लीं शक्तिं सदिताये वटवृक्षं स्थापय्य ॥ अग्निनीला
 ॥ तामसदिताये सा गीताय सगता स्य निवा नाय ॥ ह्रीं मम मय
 ॥ अथ धूप दीप पूजा वलिगृह्णन् सर्वार्थसिद्धिं भयं यच्छुभं

॥२॥ ॐ क्लीं सर्वार्थसिद्धिं कुरु स्वाहा ॥ ॥ आवाहना
 दिमुद्रा ॥ ० ॥ अथ धूप दीप पूजा वलिगृह्णन् ॥ गता वटवृक्षं
 वलिगृह्णन् ॥ नै ॥ क्लीं क्लीं क्लीं ॥ क्लीं गणेशाय वलिगृह्णन्
 ॥ नै ॥ क्लीं क्लीं क्लीं ॥ क्लीं गणेशाय वलिगृह्णन्
 ॥ नै ॥ क्लीं क्लीं क्लीं ॥ क्लीं गणेशाय वलिगृह्णन्

दा॥ नै॥ ॐ शीमिद्धिआगिनीयावलिगृह्णस्वादा॥ नै॥
 ॐ शीमिद्धिवा मूलायेवलिगृह्णस्वादा॥ चर्मजव
 लि॥ मयवलिगृह्ण॥ आवाहनं दियानिमूर्खदृष्टि॥
 नै॥ धूर्यनमः॥ दीदीर्घनमः॥ मूलद्विग्याहलि॥ नै॥ न॥ स॥
 मयचुय॥ धूर्यदीर्घ॥ मूलन॥ विन्दुविय॥ जयसाव॥
 इन्द्रकाय॥

ॐ नमोऽलिकाये॥ श्रीमैवर्क्यादि॥ वाङ्मयान्मरु
 वृषीवद्रुवि विधधवावोदचित्ताचवोदकोमात्रीकलि
 कामाचित्तिमधूमर्धवैष्णवीगमयमाना॥ वावाहीवाउयनी
 यद्रुगवयठरानृयमानागथेन्दीचामूलावायलक्ष्मी
 नगलासहितामागवाव४यूननु॥ श्रीकमलायतिजालिनि॥
 विचन्द्रवगा४सर्वात्रुदाष्टेवविनायका४यागिनीकृपया॥ वाचवक्रवृष्टिगा४॥

एतन्महेश्वर्यादिनि ॥ गिरिवननागिय ॥ निमलच्छाय ॥ दण्डलिया
 य ॥ यद्विमान्नाय ॥ नृगुत्रयादूकस्या ॥ यद्विगवावन्नृकगवाय ॥
 नृकौली कुंजी सौंखलुलकादादि ॥ यनमाष्टिगुत्रया ॥ यनमा
 वायगुत्रया ॥ ऊर्ध्वपाणस ॥ नृयमासनयादूका ॥ अत्मासना
 नृकमासनयादूका ॥ लीढिन ॥ नृजकिगिरिविद्यका कलये

ऊ ४ रुद्रगुत्रयादूका ॥ दण्डाद्वारक्षमपनी ॥ नृकद्रपडिगवा
 ला ॥ ३ ॥ अलमकुलकुलवलकुंजी रुद्रगुत्रया ॥ वगीशान्यासी ॥ कि
 गिरिविद्यका कलये ५ ४ रुद्रगुत्रयादूका ॥ ४ ॥ नमागुगवगिरिक
 मलायेकांथी हृदयाययादूका ॥ कुं कुडिकारी कुलदीयायेकांथी
 गिरिसखाहायादूका ॥ कुं कुडिकारी वद्वेगिरिवद्वेगी गिरियायेयादू

का॥ धान अधान अधानाम् मयी वदु त्रयार्थे कं कव वाय दू पादू का॥
 कां कां मदना निकार्थे कां नरु ग्याय पादू का॥ किमिश् विवका क
 लार्थे कं ३८ ठु सु सुय पादू का॥ धन कर न्यासा॥ नमारु गवनि
 ही दुव्वे काय पादू का॥ धुं का डे काय ही पूर्वव काय पादू का॥ का
 की दुं धा य विव काय पादू का॥ धान अधान अधानाम् मयि विंशट

ल नं रु काय पादू का॥ कां कां मदना निकार्थे काय पद्वि मव काय पा
 दू का॥ किमिश् विवका क लार्थे ही य राय रव काय ही पादू का॥
 ॥ धन वकी न्यासा॥ धन कर न्यासा गुणि नं जग न्यासा॥ तगां यां ग
 य जां पं नं धुं आन नद शक्ति रं नवान नद वी रा धिय गथ मं धुं ही
 जल पाय रु धुं टा निका र्थे ही पादू का॥ कां दं दया य श धुं धुं

गुरुमंलरुद्रात्रिकायादूकी॥ धनवलि॥ सुगुणपदिरु
 द्वात्रिकायादूकी॥ धनवलि॥ सुगुणपदिरुद्रात्रि
 कायादूकी॥ धनवलि॥ द्वात्रिकायादूकी॥ सिद्धासनयादू
 की॥ सुगुणपदिरुद्रात्रिकायादूकी॥ धनवलि॥ सुगुणपदिरु
 द्वात्रिकायादूकी॥ धनवलि॥ सुगुणपदिरुद्रात्रिकायादूकी॥

यादूकी॥ द्वात्रिकायादूकी॥ मयूरासनयादूकी॥ गुरुमंलरुद्रात्रिकायादूकी॥
 महिषासनायादूकी॥ गजसनायादूकी॥ धनवलि॥ सुगुणपदिरुद्रात्रिकायादूकी॥
 दूकी॥ सुगुणपदिरुद्रात्रिकायादूकी॥ धनवलि॥ सुगुणपदिरुद्रात्रिकायादूकी॥
 नवलि॥ माहेश्वरी॥ कोमारी॥ विष्णुवी॥ वाराही॥ लोचनी॥
 नवलि॥ महालक्ष्मी॥ धनवलि॥ सुगुणपदिरुद्रात्रिकायादूकी॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मूलरुद्रादिकारायस्वस्त्यस्तु ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मूलरुद्रादिकारायस्वस्त्यस्तु ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मूलरुद्रादिकारायस्वस्त्यस्तु ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मूलरुद्रादिकारायस्वस्त्यस्तु ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मूलरुद्रादिकारायस्वस्त्यस्तु ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मूलरुद्रादिकारायस्वस्त्यस्तु ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मूलरुद्रादिकारायस्वस्त्यस्तु ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मूलरुद्रादिकारायस्वस्त्यस्तु ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मूलरुद्रादिकारायस्वस्त्यस्तु ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मूलरुद्रादिकारायस्वस्त्यस्तु ॥

[illegible][illegible]

